महावीर जयन्ती

स्मारिका-2015

कमल मन्दिर, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, हस्तिनापुर

प्रकाशक

राजस्थान जैन सभा

52 वां गौरवशाली अंक

52 वाँ गौरवशाली अंक

वीर सम्वत् 2541

भगवान महावीर का 2614 वाँ जन्म जयन्ती समारोह

महावीर जयन्ती

स्मारिका 2015

प्रबन्ध मण्डल

अमरचन्द छाबड़ा
(चंदलाई वाले)
देवेन्द्र मोहन जैन कासलीवाल
(ढ़ेहर के बालाजी)
रविन्द्र कुमार जैन, बैनाड़ा
(तिलक नगर)
डी. के. जैन
(मानसरोवर)
राजेन्द्र कुमार शाह
(प्रताप नगर)
नरेन्द्र कुमार पाण्ड्या
(सांगानेर)
अरुण कुमार जैन
(श्याम नगर)
अशोक कुमार अनोपड़ा
(गांधी नगर)
श्रीमती पंकज पाटनी
(बापू नगर)
विपिन कुमार बज
(महावीर पार्क)
विमल कुमार सेठी, सी.ए.
(दिल्ली)
सुदीप सोनी
(सी-स्कीम)
विनय जैन, सी.ए.
(बापू नगर)
विनोद जैन कोटखावदा
(सूर्य नगर)

प्रधान सम्पादक

डॉ. सनत कुमार जैन

प्रबन्ध सम्पादक

जय कुमार गोधा

संयुक्त प्रबन्ध सम्पादक

सुरेश बज
मनीष बैद
दर्शन जैन
अमरचंद दीवान

प्रकाशक

महामंत्री

राजस्थान जैन सभा
अहिंसा
स्थापित 1953

राजस्थान जैन सभा

रजिस्ट्रेशन नं. : 195/70/71

कार्यालय : चाकसू का चौक, जौहरी बाजार, जयपुर–302 003, फोन : 2570511
E-mail : rajasthanjainsabha@gmail.com

सन्तों की पुरातन साधना स्थली : नवागढ़

– प्रोफेसर डॉ. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

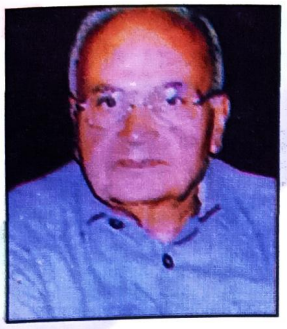

संस्कृति के प्राणतत्त्व 'तीर्थ संरक्षण' को भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ मानकर इस व्रत के – सर्वतो भावेन सम्यक् परिपालनार्थ अहर्निश दत्तावधान प्रतिष्ठारत्नाकर महान् मनीषी श्रद्धेय पं. गुलाबचन्द जी जैन 'पुष्प' टीकमगढ़ (म.प्र.) अब हमारे बीच सशरीर नहीं है, किन्तु एक महनीय जीवन्त कृति विद्यमान है – 'श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (नन्दपुर) नावई, जिला–ललितपुर (उ.प्र.)।

प्रकृति के झञ्झावातों, प्राकृतिक और राजनैतिक प्रकोपों–सांस्कृतिक परिवर्तनों आदि से घोर उपेक्षित/अपरिचित इस स्थल की सबसे पहले सुध लेने वालों के अग्रगण्य हैं – प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द जी 'पुष्प'। वस्तुतः यह स्थल सन्तों की पुरातन साधना स्थली है।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ जैन धर्म के 18वें तीर्थंकर भगवान् अरनाथ स्वामी के अतिशय सम्पन्न होने के साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका इतिहास शास्त्रों, पुराणों एवं किंवदंतियों से परे हैं। इस क्षेत्र में उपलब्ध शिलालेख एवं प्रशस्तियों में इसकी प्राचीनता जहाँ संवतः 1180 (सन् 1123 ई.) है, वहीं शिल्प एवं पुरासम्पदा की कलाकृतियाँ इसके 9वीं सदी से पूर्व की साक्षी है।

आदरणीय ब्रह्मचारी पं. जयकुमार 'निशांत', जिन ने स्वेच्छा से शासकीय सेवा से सेवानिवृत्ति लेकर आचार्य विद्यासागर जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लिया, अपने पिता प्रतिष्ठा–पितामह पं. गुलाबचन्द जी 'पुष्प' की प्रतिष्ठा अनुष्ठान की धरोहर को सहेजकर 200 पंचकल्याक एवं गजरथ महोत्सव सम्पन्न कराने का गौरव प्राप्त किया है। आपने 900 वर्ष प्राचीन नवागढ़ क्षेत्र के संवर्धन का संकल्प लेकर इसकी मौलिकता एवं शिल्पकला को संरक्षित रखते हुए विकास कार्य सम्पन्न कराया है।

आदरणीय ब्र. पं. निशात जी ने नवागढ़ के सरपंच श्री रामनारायण यादव के साथ अनेक माह दिन–दिनभर क्षेत्रीय बीहड़ एवं पर्वतों पर भ्रमण करके कई ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त किये हैं। आपने एक शैलाश्रय में अतिप्राचीन प्राग् ऐतिहासिक शैलचित्र खोजे हैं, इनमें से अधिकांश काल कवलित होकर केवल रंग के धब्बे एवं लकीरें मात्र शेष रह गये हैं, शेष बचे चित्र प्राकृतिक परिवेश, धार्मिक प्रभावना एवं साधना स्थलों का संकेत कर रहे हैं।

आदरणीय ब्र. पं. निशांत जी इतिहास की कड़ियों को जुटाने में स्थानीय वरिष्ठजनों, शिल्पविद्, इतिहासविदों को सतत् इस क्षेत्र पर लाने का सम्यक् पुरुषार्थ कर रहे हैं। इनमें पुराविद्या विशेषज्ञ पं. नीरज जी सतना, प्रसिद्ध प्रतिमाविज्ञानी डॉ. कस्तूरचंद जी 'सुमन', प्रशस्तिवाचक डॉ. भागचन्द्र जी 'भागेन्दु', इतिहास एवं कलाविद् डॉ. ए.पी. गौड, पुरातत्व अधिकारी लखनऊ, डॉ. एस. के. दुबे पुरातत्व अधिकारी झांसी, डॉ. के.पी. त्रिपाठी एवं श्री हरिविष्णु अवस्थी, इतिहासविद्, डॉ. स्नेहरानी जैन एवं डॉ. मसकूर अहमद शिल्पकला एवं शैलचित्र विशेषज्ञ डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, इंजीनियर एस.एम. जैन सोनीपत, वरिष्ठ वास्तुविद् राजकुमार जी कोठारी, जयपुर, वास्तुविद् ने नवागढ़ क्षेत्र की पुरासम्पदा को अतिविशिष्ट एवं महत्वपूर्ण निरूपित कर इसके संरक्षण हेतु ''संगहालय'' की आवश्यकता पर जोर दिया है। तदनुसार क्षेत्रीय कमेटी ने तत्परता से 130 कलाशिल्पों का झांसी पुरातत्व कार्यालय में पंजीकरण करा लिया है।

विख्यात प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द जी 'पुष्प' नवागढ़ क्षेत्र के अन्वेषक, अध्यक्ष श्री हीरालाल जी डूंडा एवं कोषाध्यक्ष श्री दयाचन्द जी सर्राफ मैनवार ने पूज्य स्व. क्षुल्लक चिदानंद जी के वर्ष 1965–66 के चातुर्मास की स्मृति से बताया कि क्षुल्लक जी आहार करने के पश्चात् बीहड़ जंगलों में साधना करने जाते थे। कभी–कभी 2–3 दिन व्यतीत हो जाते थे, लोगों के खोजने पर भी वह नहीं मिलते थे। क्षुल्लक जी ने अपना अनुभव बताया कि यह क्षेत्र अत्यन्त रमणीक, शांत एवं आत्म साधना के लिए विलक्षण ऊर्जायुक्त है। यहाँ की पहाड़ियों में न जाने कितने साधकों ने सल्लेखना धारणकर आत्म कल्याण किया है। यहाँ की ऊर्जा ध्यान के लिये स्वतः ही प्रेरित करती है। यहाँ की गुफाओं में साधना करते हुए समय का पता ही नहीं चलता, विशेष आत्मशांति प्राप्त होती है।

ग्राम के वरिष्ठ श्री हरगोविन्द जी यादव बताते है, इस पहाड़ी में कई गुफायें हैं, जिनमें से दो गुफाओं को गांव के लोगों ने हिंसक जानवरों के भय से बंद कर दिया है, यह ध्यान साधना का प्रमुख स्थान था। यहाँ की पहाड़ियों में स्थित गुफाओं में कई जीवों ने सिद्धि प्राप्त की है, जिसने जो चाहा उसे मिला है, यह तो एक सिद्ध स्थान ही है, यहाँ की चंदेलकालीन बावड़ियाँ, मन्दिर एवं मठ धरती में समा गये हैं। इनके शिलाखण्ड यत्र–तत्र आज भी बिखरे हैं तथा अधिकांश भूमि में दब गये है या दबा दिए गए हैं। यदि उनकी खोज की जाये तो निश्चित रूप से इस क्षेत्र के इतिहास एवं संस्कृति की विशेषता बताने वाली पुरा सम्पदा उद्घाटित होगी।

इनमें हिंसक पशुओं का आवास होने के कारण ग्रामवासियों ने बंद कर दिया है, इन्हें पुनः खोलने का कार्य होना है।

क्षेत्र से डेढ़ कि.मी. दूर पहाड़ी पर स्थित 'मटकी गुफा' है जो अत्यन्त विलक्षण है, विशाल शिला के मध्य एक मटकी के आकार का खाली स्थान हैं, जिसमें शिला के एक किनारे पर टूटे

स्थान से सिर अन्दर डालकर प्रवेश करने पर कमर के ऊपर का हिस्सा अंदर चला जाता है। साधक आसन लगाकर इसमें घंटों साधना कर सकता है।

क्षेत्र से लगभग 3 कि.मी. दूर बीहड़ जंगल में विशाल शिलाखण्डों के मध्य दो चट्टानों के मध्य प्राकृतिक स्थल है, जहाँ 8-10 साधक आराम से विश्राम कर सकते हैं।

पहाड़ी के दूसरे छोर पर एक विशाल चट्टान में त्रिभुजाकार गुफा, जिसमें 3-4 साधक निर्विघ्न साधना कर सकते हैं।

इसके नीचे साधक वर्षा, धूप एवं हवा से सामान्य अनुकूल मौसम में साधना कर सकते हैं।

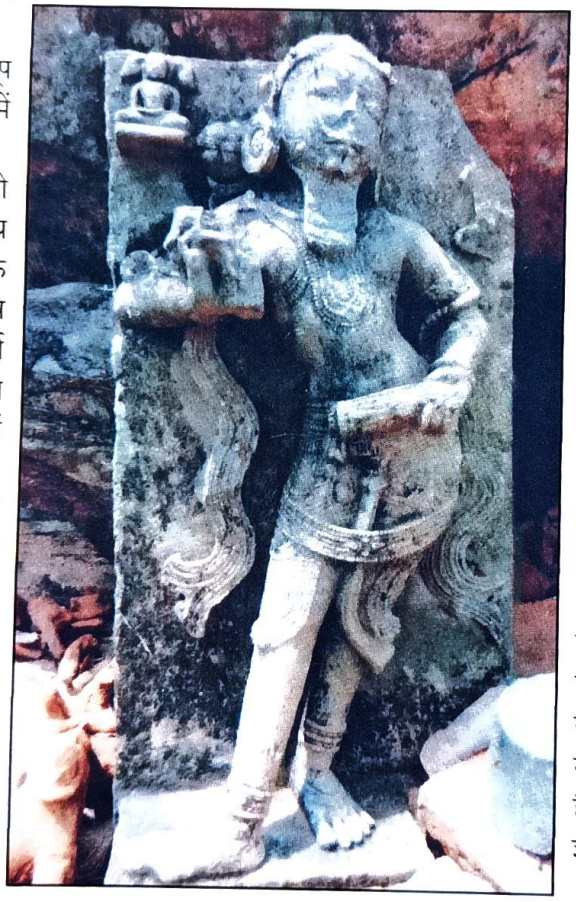

यह विशेष शैलाश्रय है जो सबसे ऊपर दो-तीन शिलाओं के आश्रय से निर्मित है। इसमें ऊपर शिला जो छत के आकार की है में प्रागैतिहासिक शैलचित्र बनाये गये हैं, जिनमें प्राकृतिक उत्कीर्ण शिल्प चित्रों के साथ रंगीन शैल चित्रांगन सांकेतिक भाषा में जैन दर्शन के सिद्धान्तों को दर्शाते हैं।

चंदेलबावड़ी :- ईंटों द्वारा निर्मित 30-35 फुट गोलाकार में फैली प्राचीन बावड़ी-जिसमें नीचे तक जाने के लिए पाषाण खण्डों की सुविधाजनक सीढ़ियाँ निर्मित हैं। वर्तमान में यह मिट्टी से भर गयी है जो जीर्णता के कारण ध्वस्त होने की कगार पर है।

रहस्मय मन्दिर के अवशेष :- विशेष शिलाखण्ड एवं आमलक के शिलाखण्ड सहित विशाल तेंदू के वृक्षों के मध्य अपने गर्भ में न जाने कितने रहस्यों को समेटे हैं, खोज का विषय हैं। ग्रामीण जनों में इसकी विशेष श्रद्धा एवं बहुमान है।

पुरा विद्या विशेषज्ञ डॉ. स्नेहरानी, डॉ. मशकूर अहमद जी, डॉ. भागेन्दु जैन, डॉ. ए.पी. गौड एवं डॉ. के.पी. त्रिपाठी के अनुसार यहाँ की खुदाई विशाल खंडित जिनबिम्ब एवं जैनशासक की प्रतिमा इस क्षेत्र के हजारों साल प्राचीन समृद्ध नगर होने की संभावना व्यक्त करते हैं। यह जैनों का विशेष सम्पन्न क्षेत्र एवं साधना स्थल रहा होगा, जो काल के क्रूर थपेड़ों से कब भूमि में समा गया, अतीत के गर्भ में है। पहाड़ पर स्थित देवों के शिल्प के शीर्ष पर स्थित अर्हन्त प्रतिमा के कारण प्रतिमा-विज्ञान इन्हें यक्ष एवं जैनशासक के रूप में वर्णित करता है, परन्तु ग्रामीणजनों की अगाध श्रद्धा इन्हें गांव का संरक्षण करने वाले एवं दुःखों का निवारण करने वाले दूल्हादेव एवं बगाज माता के रूप में पूजती है।

डॉ. स्नेहरानी जी ने अपने अनुभव से शैल-चित्रों की रचनाधर्मिता को हड़प्पा मोहन जोदड़ों से प्राचीन बताया है। इन शैलाश्रयों में शैल-चित्रों के अलावा शिलालेखों की श्रृंखला, पाषाण-औजार एवं अन्य शिल्प भी मिलना चाहिए, क्योंकि शैल-चित्रों की आकृति इस क्षेत्र को निर्वाण क्षेत्र होने का संकेत कर रही है। यह शैलचित्र भीमबैठका के शैल-चित्रों से भिन्न है। भीमबैठका के शैल-चित्रों में उदरपूर्ति के लिए आखेट (शिकार) को प्रदर्शित किया गया है, जबकि नवागढ़ के शैलचित्रों में प्राकृतिक समृद्धि एवं धार्मिकता को प्रदर्शित किया गया है। इन चित्रों को अलग-अलग काल में अलग-अलग रंगों एवं शिला को उकेरित करके बताया गया है। इससे प्रतीत होता है कि यहाँ कई पीढ़ियों ने साधना करके इस क्षेत्र को जीवंतता प्रदान की है।

आपके अनुसार नवागढ़ के शैलचित्र वृषभ, अहिंसक जीवन शैली, प्राकृतिक समृद्धि, कृषि, धार्मिक जीवन पद्धति का प्रतीक है। वृषभ के सामने चौकोर रचना की लकीरें धर्म के प्रभाव को चारों दिशाओं एवं विदिशाओं में प्रसारित होने का प्रतीक है। तरंगे सरोवर एवं विशाल जलाशयों का, गोल रचना विशाल कूपों एवं बावड़ियों का, अन्य रचना में पर्वत श्रृंखला की चोटी इस क्षेत्र की सुरम्य रमणीक साधना स्थली को इंगित करती हैं। अन्य शैलचित्र में गृहाकृति साधना वसतिका जहाँ सल्लेखना धारणकर समाधिमरण की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है, को चित्रित किया है, उसी के ऊपर ज्ञान सूर्य रूप चकरी प्रकाशमान है।

हल्केरंग के शैलचित्र यहाँ साधकों के महाव्रतों-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह को धारण करने वाले महामनीषियों की तपःसाधना के विशेष आयाम अर्थात् सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चरित्र, सम्यक् तप रूप आराधनाओं को दर्शा रहे हैं।

एक अन्य अतिविशिष्ट रचना संतों की सल्लेखना चर्या की ओर संकेत कर रही है, जिसमें साधक रत्नत्रय अर्थात् सम्यग्दर्शन, ज्ञान एवं चारित्र को धारणकर तपः शक्ति से कषायों को कृष् करके आत्मसाधना का संकेत है।

डॉ. स्नेहरानी जी ने अपने दीर्घ अनुभव एवं तीक्ष्ण दृष्टि में यहाँ के शैलाश्रय में सफेद आधार पर गेरु वर्ण से निर्मित चित्रों के साथ शिला पर कुरेदकर उकेरे गये, बूम्ब स्केच, लोकपूरणी सैंधव चकरी, केवली समुद्घात को केवल दर्शन रूप नेत्र सम्पूर्ण ज्ञान अर्थात् केवलज्ञान को सप्त पंखुड़ी पुष्प से जैन दर्शन के प्रमुख आधार सप्त परम स्थान-यथा सज्जाति, सद्गृहस्थ, पारिव्राज्य, सुरेन्द्र पद, चक्रवर्ती, पंचपरमेष्ठी एवं निर्वाण को दर्शाता है।

गाढ़े रंग की आकृति सैंधव काल के चित्रों से मिलान करने पर संसारी जीव को सल्लेखना साधना द्वारा दुःखमय संसार से निकालकर पंचम सिद्धगति में आत्मा के ऊर्ध्वगमन का प्रतीक है।

इस लघुकाय शैलाश्रय के शैलचित्रों की चित्र संयोजना-साधना के विशेष रूपों को स्पष्ट कर रही है, क्योंकि बांयी ओर से दांयी ओर क्रमशः साधना के वृद्धिगंत आयामों को दर्शाया गया है, जहां साधक वसतिका में सल्लेखना धारण करके आत्म शक्ति का विकास करते हुए, पंच महाव्रतों को धारण करके चारों आराधनाओं से कषाय को कृष् करके अहिंसक धर्म की चतुर्दिक् प्रभावना करके सप्तपरम स्थान के श्रेष्ठपद मोक्ष अर्थात् निर्वाण को प्राप्त करता है।

आदरणीय ब्र.पं. जयकुमार 'निशांत' द्वारा खोजे गये शैलाश्रय प्रागैतिहासिक शैलचित्र-जैन धर्म की प्राचीनता, जैन जीवन पद्धति, साधना एवं मृत्यु महोत्सव की पुरातन परम्परा के साथ नवागढ़ की समृद्धिशाली जैन संस्कृति के संस्थापक जैन शासक की प्रतिमा इसे विशेष साधना स्थली निर्वाण भूमि के रहस्यों को उद्घाटित करने वाले हैं।

वस्तुतः आदरणीय ब्र. पं. निशान्त जी का सतत् जागरूक पुरुषार्थ नवागढ़ क्षेत्र को भारतीय संस्कृति, कलाशिल्प एवं पर्यटन का विशेष रूप प्रदान करेगा, जिससे सम्पूर्ण विश्व इस क्षेत्र पर आकर रहस्यमय सूत्रों को उद्घाटित कर आत्मशांति प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेगा।

इस परिक्षेत्र के शैलचित्रों एवं शैलाश्रयों की प्राचीनता और कलावशेषों का सम्यक् अध्ययन इस क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास को किस शताब्दी तक ले जाता है ? प्रतीक्षित है। शासन एवं प्रशासन का ध्यान इन शैलाश्रयों तथा शैल चित्रों के संरक्षण और कला प्रेमियों-मर्मज्ञों-मनीषियों का ध्यान इनके अध्ययन-अनुशीलन की ओर प्रार्थित है। कहीं ऐसा न हो कि यहाँ के शैल-चित्र भी अतीत की स्मृतियों को समेटे काल के क्रूर थपेड़ों में विलीन हो जायें या आधुनिक संसाधनों के द्वारा भवन, सेतु, मार्ग आदि के निर्माण हेतु बोल्डर-गिट्टी बनकर हमेशा के लिए विनष्ट हो जायें।

प्रकृति की गोद में समाये, इतिहास, संस्कृति, कला और पुराविद्याओं के महत्वपूर्ण इस विस्मृत अध्याय को प्राण-पण से पुनरूज्जीवित करने वाले उन महामनीषी (स्व.) प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्रजी 'पुष्प' को कोटि-कोटि नमन। और उनके दायाद को न केवल सुरक्षित प्रत्युत कोटि-गुणित अधिक सम्वर्द्धित कर विश्व स्तर पर सुप्रष्ठित करने वाले नवागढ़ क्षेत्र के सभी कार्यकर्ताओं को सम्यक् पुरुषार्थ एवं आदरणीय बाल ब्रह्मचारी प्रतिष्ठाचार्य पं. जय 'निशान्त' जी का सतत् जागृत सार्थक समर्पण शतशः अभिनन्दनीय है। उनकी लक्ष्य भेदी साधना श्रमण संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत के साथ मध्यकालीन साधना के अनुद्घाटित अध्यायों को सम्पुष्ट करके 'चेदि जनपद' के सम्पूर्ण परिक्षेत्र की समृद्धि को रूपायित कर सकेगी, ऐसी आशा है।

– निदेशक, संस्कृत, प्राकृत तथा
जैन विद्या अनुसन्धान केन्द्र, दमोह (म.प्र.)

✦ ✦ ✦